B.A(Hons) Sanskrit
Part – II
Paper – III

डॉ अपर्णा कुमारी
सं॰प्रा॰ (गेस्ट फैकल्टी)

कादम्बरी - शुकनासोपदेश

Q.1 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' उक्ति को स्पष्ट करें।

Ans. संस्कृत साहित्य के गद्य-काव्य प्रणेताओं में बाणभट्ट प्रमुखतः सर्वश्रेष्ठ महाकवि हैं। उनके कृतित्व और महान व्यक्तित्व के कारण ही साहित्य के मूर्धन्य स्थान परये प्रतिष्ठित किये गये हैं क्योंकि कविता में किसी पद्य विशेष में अपनी कल्पना अथवा शब्द-चित्र विशेष के प्रयोग द्वारा ही कवि प्रशंसा का अधिकारी सकता है। इतना ही नहीं गद्यरचना में कवि अथवा गद्यकार तभी प्रशंसा का भाजन बन सकता है, जबकि उसकी समग्र रचना अनुपम हो, आकर्षक हो, भावपूर्ण हो और कल्पना सौंदर्य से पूर्ण हो।

गद्य काव्य का लेखन सहज होते हुये भी उसमें उत्कृष्टता एवं लोकप्रियता प्राप्त करना सरल नहीं है क्योंकि गद्यकाव्य का पाठन जनता के अधिक निकट है। बाणभट्ट ऐसे गद्यरचना कार हैं जो अपने गद्य-काव्य में एक ही बात को अनेक प्रकार से अलंकृत शैली में प्रस्तुत किया है। यह उनकी काव्य-प्रतिभा को दर्शाता है। इनकी रचना इनके परवर्ती कवियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। इनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा, व्यापक ज्ञान, अद्‌भुत वर्णन शैली और प्रत्येक वर्ण्य विषयके सूक्ष्म वर्णन के आधार पर कहा गया कि बाण ने किसी विषय को अछूता नहीं छोड़ा है। और जो कुछ उन्होंने गद्य काव्य की रचना में वर्णन किया है उससे आगे कुछ भी कहने के लिए शेष नहीं रह गया है। ऐसा लगता है कि उनकी रचना के बाद जितनी रचनाएँ हुई हैं सब बाण रचित ग्रंथ का जूठन ही है। बाण ने जितनी सुन्दरता, सहृदयता और सूक्ष्म दृष्टि से बाह्यप्रकृति का वर्णन किया है उतनी गहराई से अंतः प्रकृति और मनोभावों का विश्लेषण किया है। प्रत्येक वर्णन इतने व्यापक और सटीक हैं कि पाठक पढ़कर अत्यंत प्रभावित हो जाता है। उन्होंने प्रातःकाल वर्णन, संध्या वर्णन, शूद्रक वर्णन, शुक वर्णन, चाण्डाल-कन्या वर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन, शबर सैन्य वर्णन, उज्जयिनी वर्णन, तारापीड वर्णन, इन्द्रायुध वर्णन, अच्छोद सरोवर वर्णन, महाश्वेता-कादम्बरी वर्णन में जो वर्णन किया है वह सजीव वर्णन सा प्रतीत होता है।

इसी प्रकार विलासवती के पुत्रहीनता जन्य विषाद का वर्णन, चन्द्रापीड के देखकर स्त्रियों के हाव-भाव का वर्णन, पुण्डरीक की मृत्यु पर महाश्वेता और कपिंजल के विलाप वर्णन उससे पहले पुण्डरीक को देखकर महाश्वेता के प्रेमोद्रेक का वर्णन, चन्द्रापीड को देखकर कादम्बरी के हार्दिक भावों का वर्णन आदि महाकवि बाण की हार्दिक संवेदना और सहृदयता का परिचायक है। शुकनासोपदेश नामक अंश में महामंत्री द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड को दिये गये उपदेश तो कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष परिलक्षित करता है। बाण के वर्णन में भाषा एवं भाव का सामंजस्य है। अलंकारों की प्रचुरता है किन्तु उपयुक्त प्रयोग है।